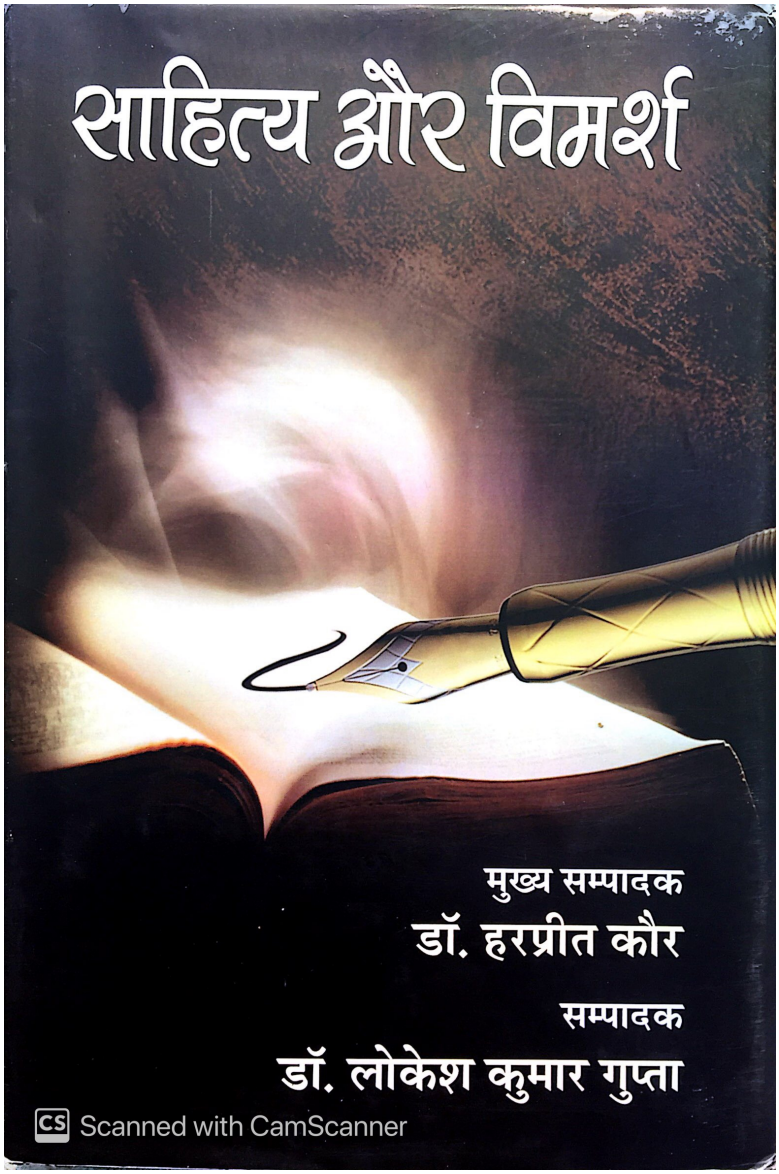

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-86402-48-6

प्रकाशक :
श्रीसाहित्य प्रकाशन
डी-580, अशोक नगर, गली नं. 4
निकट वजीराबाद रोड, शाहदरा, दिल्ली-110093
मो० : (0) 9873390338
web: shrisahityaprakashan.com
email: shrisahityaprakashan@gmail.com
© सम्पादक
प्रथम संस्करण : 2019
आवरण : अमित कुमार
शब्द-संयोजन : अर्पित वशिष्ठ
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स
₹ 650

Sahitya aur Vimarsh
Edited by Dr. Harpreet Kaur &
Dr. Lokesh Kumar Gupta

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

गुरु नानक देव जी का गूढ़ दर्शन : *डॉ. हरप्रीत कौर, प्राचार्या* 19

हिन्दी नाटकों में दलित चिन्तन और चेतना : *डॉ. कंचन* 33

दलित साहित्य : अवधारणा और विचार : *डॉ. नवाब सिंह* 39

मुक्ति-द्वार पर दस्तक देती स्त्री-कलमें : *डॉ. अंजना वर्मा* 49

नारी चेतना के स्वर और बाबल तेरा देस में : *डॉ. वीरेन्द्र सिंह* 54

भारतीय प्रिंट मीडिया में स्त्री : *डॉ. सीमा सिंह* 59

बिक्रम सिंह की कहानियों में स्त्री विमर्श : *डॉ. रमेश कुमारी* 65

राससुन्दरी देवी की 'आमार जीबन' : *एक आत्मकथा : डॉ. श्रीता मुखर्जी* 77

नारी विमर्श के विविध आयाम : नाटक 'इला' : *डॉ. पूनम शर्मा* 83

समकालीन नाटकों में नारी-विमर्श : *डॉ. विकास शर्मा* 88

आदिवासी साहित्य में स्त्री विमर्श एवं चिन्तन : *डॉ. राहुल उठवाल* 96

कथा साहित्य में नारी विमर्श और चिन्तन : *बिभा कुमारी* 101

स्त्री-विमर्श : हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में : *डॉ. ममता चावला* 105

मध्यकालीन साहित्य में नारी : *डॉ. रजिन्दर कौर* 110

तुलसीदास के काव्य में नारी दृष्टिकोण : *डॉ. सविता* 116

पंजाबी लोकगीतों में नारी का चित्रण : एक दृष्टिपात : *डॉ. गुरशरण कौर* 122

लोक संस्कृति में नारी वेदना एक अवलोकन : *डॉ. सुनिल कमार* 127

स्त्री विमर्श की नवीन अभिव्यक्ति: नीलदेवी : *डॉ. आशुतोष शर्मा* 132

स्त्री मुक्ति का प्रश्न और मृणाल : *डॉ. रीता दूबे* 137

कबीर के परिप्रेक्ष्य में नारी : *डॉ. चारू आर्या* 142

जातीय दम्भ के कुत्सित मनोविज्ञान को उकेरती सांभरिया की कहानियाँ : *डॉ. शिवताज सिंह* 147

Scanned with CamScanner

पंजाबी लोकगीतों में नारी का चित्रण : एक दृष्टिपात

—डॉ. गुरशरण कौर
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग
माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

भारतीय साहित्य में नारी के बारे में के कई विचार किए गये हैं। वैसे तो नारी के अनेक रूप है माँ, बेटी, बहन, सहेली, भाभी, दादी, नानी, मामी, चाची, सास, बहू, बुआ इनमें से हम कुछ रूपों के दर्शन लोक गीतों के माध्यम से वर्णन करने का प्रयास करेंगे।

कुड़ीये किसमत पुड़ीये नी तैनू ऐना प्यार देयाँ अपने हिस्से दी दुनियाँ मैं तैथों वार देयाँ।

तू जम्मी ता मापे कैन पराई ओ धीये
सौरे घर विच कौन बगानी जाई ओधीये
केड़े घर दी दुनियाँ आखाँ तैनु की सतकार देयाँ
अपने हिस्से दी दुनियाँ मैं तैथों वार देयाँ।

इक धोबी लई सीता माँ नू राम बिसार गये
जुए विच द्रोपदीये तैनू पांडव हार गये
जी करदा मैं अपनी किसमत तैनु वार देयाँ
अपने हिस्से दी दुनियाँ मैं तैथों वार देयाँ।

Scanned with CamScanner